2nd Edition

कृष्ण

अन्तिम दिनों में

books

डॉ. अशोक शर्मा

कृष्ण : अन्तिम दिनों में

(उपन्यास)

डॉ. अशोक शर्मा

रेडग्रैब बुक्स
इलाहाबाद

रचनाकार परिचय - डॉ. अशोक शर्मा

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया से सेवानिवृत्त डॉ. अशोक शर्मा ऐतिहासिक और पौराणिक पात्रों को केन्द्र में रखकर उपन्यास लिखने के लिये जाने जाते हैं। आपके पूर्व प्रकाशित दो उपन्यास 'सीता सोचती थीं' और 'सीता के जाने के बाद राम' प्रस्तुति में तथ्यपरक दृष्टि तथा पात्र-गठन की विशेषता के कारण जाने जाते हैं, जिसमें लेखक डॉ. अशोक शर्मा सभी पात्रों के साथ समुचित न्याय करने में सफल रहे हैं।

'कृष्ण : अन्तिम दिनों में' के प्रथम संस्करण को पाठकों से व्यापक सराहना मिली, तथा इस पुस्तक के अंग्रेजी अनुवाद 'Krishna – in his last days' को भी पाठकों ने हाथों-हाथ लिया है। इन चार उपन्यासों के अतिरिक्त डॉ. अशोक शर्मा के दो काव्य संग्रह 'श्री कृष्ण शरणम्' तथा 'मेरे पंख मेरा आकाश' भी प्रकाशित हैं।

'कृष्ण : अन्तिम दिनों में' उपन्यास में भी पात्र गठन में कृष्ण के साथ-साथ अन्य सभी पात्रों के कद के साथ समझौता नहीं हुआ है। साथ ही रोचकता तथा पठनीयता बनी भी बनी रहती है।

प्रथम संस्करण की भूमिका

द्वापर युग में ईश्वर ने अपनी समस्त शक्तियों के साथ साधु पुरुषों के उद्धार और आसुरी शक्तियों के दमन के लिए महाराजा शूरसेन के पुत्र वसुदेव और उनकी पत्नी, राजा देवक की पुत्री देवकी के गर्भ से भगवान श्रीकृष्ण के रूप में जन्म लिया था।

उनके मानव जीवन के अन्तिम दिनों पर लिखने का विचार मन में आयाए तो लगा कि जब भगवान कृष्ण ने सोचा होगा कि इस मानव शरीर को छोड़ने का समय आ गया है, तब उनके मन में कैसे भाव आने शुरू हुए और कैसे उन्होंने इस देह से विदा ली होगी, इसका चित्रण आसान नहीं होगा। फिर लगा, लिखते समय मन में उनका ध्यान और दृष्टि उनकी ओर बराबर बनी रहे तो यह कार्य आसान हो सकता है।

बख्शी का तालाब, लखनऊ में माँ चन्द्रिका देवी की शक्ति पीठ है, जहाँ भीम के पौत्र बर्बरीक ने तपस्या की थी। वहाँ से भगवान श्रीकृष्ण का एक छोटा सा चित्र लाया। उसे अपने लिखने की मेज के सामने रख लिया। लिखते समय कई बार इतनी अच्छी अनुभूतियाँ मन में आई, लगा जैसे कि मैं उस कालखण्ड का दृष्टा हो गया हूँ। इसे आनन्द की अनुभूति कह सकते हैं।

लेखन थोड़ा सा आगे बढ़ा तो वृन्दावन में कृष्ण का रासलीलायें करना, स्नान करती गोपियों के वस्त्र चुराना, सोलह हजार एक सौ आठ रानियाँ होना जैसे प्रकरण भगवद्गीता के प्रणेता योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण के चरित्र से मेल खाते नहीं लगे।

यह कार्य थोड़ा सा और आगे बढ़ने पर यह लगने लगा कि द्रौपदी के पाँच पति होने की बात तथा धृतराष्ट्र, पाण्डु, विदुर व कर्ण और पाँचों पाण्डवों के जन्म के सम्बन्ध में प्रचलित मान्यताएँ स्त्रियों के चरित्र का हनन जैसी हैं।

ऐसा लगने लगा कि इन सभी प्रसंगों का पुनरावलोकन होना चाहिए। यह भी लगा कि इन प्रसंगों के सम्बन्ध में स्वयं कृष्ण की अपनी दृष्टि क्या रही होगी?

यह पुनरावलोकन इसलिए भी और आवश्यक लगा कि भारतीय इतिहास से यदि राम और कृष्ण को मिथक मानकर निकाल दिया जाए तो यहाँ भारतवर्ष जैसा कुछ भी शेष नहीं बचेगा। उनके या उस समय के महान चरित्रों के साथ अभद्र प्रसंग जोड़ना, ऐसे प्रसंगों को मान्यता देना, उन्हें सच सिद्ध करने के लिए किसी भी पुस्तक का सन्दर्भ देना या इसके लिये भक्तिपूर्ण अथवा दार्शनिक व्याख्यायें प्रस्तुत करना, यह सब उन चरित्रों की गरिमा पर आघात करता है।

जिस कालखण्ड के ये प्रसंग हैं, उस समय का इतिहास लेखन मुझे व्यवस्थित और क्रमबद्ध नहीं लगता। इतिहास कथाओं के रूप में जीवित रखा जा रहा था, अतः उसमें काल्पनिक और अतार्किक बातों का जुड़ना स्वाभाविक था, और इन बातों को जोड़ने वालों द्वारा इसमें अपनी रुचि के अनुसार मोड़ देना भी बहुत सहज और सरल था।

मैंने इस पुस्तक के लेखन में गीताप्रेस, गोरखपुर की प्रकाशित ‘संक्षिप्त महाभारत’, आधुनिक कृष्ण भक्त, महान विद्वान व सारे विश्व में ‘हरे कृष्ण हरे राम’ के द्वारा ईश्वर के नाम को गंुजारित करने वाले श्रीमद ए.सी. भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद विरचित ‘पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री कृष्ण’ से सन्दर्भ लिये हैं। श्री कृष्ण और उस काल के चरित्रों के बारे में पूर्ण प्रामाणिक सारे तथ्यों को एकत्र कर पाना किसी के लिये भी सम्भव नहीं है, किन्तु प्रयास तो किया ही जा सकता है और वही मैंने किया है।

कुछ विद्वान कहते हैं, महर्षि व्यास ने जो महाभारत लिखी उसकी विशालता अकल्पनीय थी, जिसे उन्होंने बोला और गणेश जी ने लिखा था। यह भी कहते हैं कि महर्षि व्यास ने उसमें आठ हजार आठ सौ इतने कठिन श्लोक भी लिखे थे, जिनका अर्थ समझने में गणेश जी को भी समय लगता था। उस विशाल ग्रन्थ को एक जीवन में पढ़ना और समझना सम्भव नहीं लगता।

गीताप्रेस की संक्षिप्त महाभारत भी दो खण्डों में और लगभग पन्द्रह सौ पृष्ठों में है। महाभारत में केवल कृष्ण और महाभारत से जुड़े चरित्रों का वर्णन ही नहीं है, अपितु नल-दमयन्ती सहित पता नहीं कितने ही पौराणिक चरित्रों का विस्तृत आख्यान भी है। इसमें सम्पूर्ण गीता भी है।

इन पंक्तियों का लेखक ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण हिन्दू समाज जो भगवान कृष्ण में विश्वास रखता है, महर्षि व्यास के प्रति सदैव कृतज्ञ रहेगा, जिन्होंने इसे लिपिबद्ध किया अन्यथा शायद ये सम्पूर्ण चरित्र समय के पटल से मिट चुके होते।

महर्षि व्यास के बाद कालान्तर में व्यास गद्दी पर बैठने वाले सभी सन्तों को व्यास कहने की परम्परा चल पड़ी। स्वाभाविक है कि यदि उन्होंने इस कथा में अपनी कल्पना से कुछ भी जोड़ा होगा तो वह भी महर्षि व्यास द्वारा लिखित कहा जाने लगा होगा।

इनमें से बहुत सी कथायें मात्र श्रद्धा तक सिमटकर तर्क से बहुत परे चली जाती हैं। बहुधा धार्मिक आख्यानों में इस प्रकार की कथायें मिलती हैं।

मैंने भगवान कृष्ण और महाभारत के प्रमुख स्त्री चरित्रों से सम्बन्धित उन कथाओं का तार्किक विश्लेषण करने का प्रयास किया है, जो मुझे इन चरित्रों पर धब्बेनुमा, पूर्णतया कपोल-कल्पित और किसी विशेष उद्देश्य को लेकर लिखी और प्रचारित की हुई सी लगीं।

कुछ विद्वानों को मेरा इन कथाओं के तार्किक विश्लेषण का प्रयास प्रथम दृष्टि में अनुचित और श्रद्धा पर आघात पहुँचाने वाला लग सकता है, किन्तु उन्हें भी और दूसरे बहुत से लोगों को भी इस पुस्तक को पढ़ने के बाद यह सर्वथा उचित और इन चरित्रों का कद बढ़ाने वाला अवश्य लगेगा, इसी विश्वास और उद्देश्य के साथ मैंने यह पुस्तक लिखी है।

आज की नई पीढ़ी के पास बड़े-बड़े प्राचीन ग्रन्थों को पढ़ने की रुचि हो भी तो समय नहीं हैं। यह पुस्तक उन तक इन पौराणिक चरित्रों को तार्किक व्याख्या के साथ पहुँचाने को एक छोटा सा प्रयास भी है।

हमारे पौराणिक चरित्रों को कितनी ही बार कई ढंग से प्रस्तुत किया गया और समझा गया है,

इसका एक उदाहरण यह है कि बहुधा कोई भी अपने परिवार में किसी कन्या का नाम द्रौपदी नहीं रखना चाहता; वे भी नहीं जो लोग उन्हें श्रद्धा से देखने की बात करते हैं व उनके पाँच पति होने को शास्त्र-सम्मत बताते हैं।

द्रौपदी के प्रसंग इतनी अधिक बार और इतने अधिक पृष्ठों में महाभारत में आये हैं कि ऐसा लगने लगता है जैसे महाभारत में कृष्ण के बाद नायक-नायिका सब कुछ द्रौपदी ही थीं।

ये प्रसंग तथ्यों पर आधारित नहीं, कपोलकल्पित भी हैं, यह सन्देह तब और दृढ़ होता है जब तथाकथित पतियों का द्रौपदी से संवाद यथा युधिष्ठिर-द्रौपदी संवाद, भीम-द्रौपदी संवाद, अर्जुन-द्रौपदी संवाद बहुत विस्तार से और कई-कई पृष्ठों में इस प्रकार दिये जाते हैं जैसे इनका वर्णन करने वाला कथाकार इन पति-पत्नी के बीच बैठा सब कुछ सुन और लिख रहा था।

कोई व्यक्ति अपने आस-पास घट रही घटनाओं का विवरण दे सकता है, किन्तु पति पत्नी के मध्य एकांत में होने वाले वार्तालाप का इतना विषद वर्णन इंगित करता है कि यह घटनाओं का सटीक विवरण नहीं वरन् उर्वर कल्पनाशीलता का कार्य है।

व्यास जी को दिव्य दृष्टि प्राप्त थी, किन्तु उनके द्वारा पति-पत्नी के मध्य हो रहे वार्तालाप को सुनने और उसे लिखने की बात सोचना भी एक अशोभनीय कल्पना है।

महाभारत के रूप में जो ग्रन्थ आज उपलब्ध है वह महर्षि व्यास की असली महाभारत - महर्षि व्यास ने 'जय' नामक ग्रन्थ लिखा था जिसने कालान्तर में महाभारत का रूप ले लिया- का संक्षिप्तीकरण, विस्तार या विकृतीकरण कुछ भी हो सकता है।

किसी असत्य बात को भी घुमाफिरा कर और विभिन्न कहानियों द्वारा यदि बार-बार कहा जाए तो वह सत्य लगने लगती है। यहाँ द्रौपदी के पाँच पति होने की बात पर इतना अधिक जोर दिया जा रहा है कि वह किसी नियोजित, सोद्देश्य और असत्य भावना का प्रकटीकरण लगने लगती है।

मुझे लगता है कि द्रौपदी के चरित्र को इतना अधिक विस्तार देकर और तरह-तरह की कहानियों का सृजन कर उनके पाँच पति सिद्ध करने का प्रयास भी इसी का परिणाम है।

राधा, कृष्ण, गोपियों या इसी तरह के अन्य पौराणिक और धार्मिक चरित्रों के आख्यान में मांसल सौन्दर्य का वर्णन, भले ही वह जयदेव का गीत-गोविन्दम हो या मंच पर प्रस्तुत देवी-देवताओं का उपहास करती स्तरहीन रचनायें, प्रतिभा के विकृतीकरण का उदाहरण भी हैं और रचनाकार के सोच पर भी प्रश्नचिन्ह लगाती हैं।

इस पुस्तक को लिखते समय मैंने बराबर भगवान श्रीकृष्ण को अपने मन में और चित्र के रूप में सामने रखने का प्रयास किया है और मेरा विश्वास है कि उनकी प्रेरणा से ही मैं यह पुस्तक लिख पाया, अतः पुस्तक में यदि कुछ भी अच्छा है तो वह उनका है, और जो कुछ बुरा है वह मेरा है, और उन्हीं से मेरी प्रार्थना है कि उनके इस निर्मल चरित्र को पढ़ते या पढ़ने के लिये प्रेरित करने वालों पर उनकी अहेतुक कृपा सदैव बनी रहे।

मैंने पुस्तक को उपन्यास का रूप देकर कुछ रोचक बनाने और वर्तमान पीढ़ी के लिए ग्राह्य

बनाने का और घटनाओं के तार्किक विश्लेषण का प्रयास किया है।

मैं समय-समय पर प्रेरणा के लिए अपने साहित्यकार मित्रों और बहुत सुन्दर सुझाव देने के लिए वरिष्ठ साहित्यकार श्री शिवनारायण मिश्र, गोसाईगंज, लखनऊ का विशेष आभारी हूँ।

-अशोक शर्मा

द्वितीय संस्करण की भूमिका

पुस्तक का द्वितीय संस्करण प्रस्तुत करते समय मैं अत्यन्त हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। जिस तरह सुधी पाठकों ने इसे अपना समर्थन दिया उसके लिये मैं सभी का बहुत आभारी हूँ। यह संस्करण परिवर्धित तो है ही, साथ ही इसमें भगवान कृष्ण की ऐतिहासिकता के प्रमाण प्रस्तुत करता हुआ परिशिष्ट भी है। आपका सहयोग प्राप्त होगा, इस विश्वास के साथ...

-अशोक शर्मा

अनुक्रम

1. स्मृतियों के उपवन
2. स्नेह के स्वर
3. मन छलके
4. पीड़ाएँ जागीं तो
5. बातें जब चलती हैं
6. स्मृतियाँ चुभती हैं
7. दुरभिसन्धियों के पृष्ठ
8. गीत की पंक्तियों के मध्य
9. राधा : एक ज्योति
10. एक पक्ष यह भी
11. नारी विमर्श
12. प्रयाण से पूर्व-1
13. प्रयाण से पूर्व-2
14. प्रयाण की ओर

परिशिष्ट

1 - स्मृतियों के उपवन

द्वारिका के समुद्रतट पर एक शिलाखण्ड पर कृष्ण शान्त, अकेले और विचारमग्न बैठे थे। कंस के वध से लेकर वर्तमान तक का अधिकांश समय युद्धों की भेंट चढ़ चुका था। अब युद्ध नहीं थे, तो फिर बाँसुरी जो बरसाने से राधा जी को खींच लाती थी, जिसे छिपाकर राधा और उनकी सखियाँ कृष्ण से अपनी हर बात मनवा लिया करती थीं, की याद हो आई।

कैसे होते थे वे प्रेम और संगीत से भरे हुए पल, जब मानों अमृत की वर्षा होती थी। मात्र ग्यारह वर्ष की आयु थी, जब अक्रूर जी उन्हें मथुरा लिवा ले गये थे। उनका जीवन में दुबारा गोकुल लौटना नहीं हो सका। कृष्ण ने दृष्टि उठाई। सामने देखा, दूर तक अगाध जल ही जल और उसे झुककर छूता हुआ आसमान।

पश्चिम की दिशा लालिमा पूर्ण हो रही थी। सूर्य की रश्मियाँ बहुत लम्बी दूरी तय कर के आई थीं, और समुद्र की लहरों के साथ उछल-कूद में लगी थीं। कुछ समुद्री पक्षी और कुछ छोटी मछलियाँ भी इस खेल में शामिल थे। कभी-कभी कोई तेज लहर आती थी और उनके पैरों को भिगो जाती थी। जैसे-जैसे शाम घिर रही थी, लहरों का शोर तेज होता जा रहा था।

उनकी दृष्टि क्षितिज के छोर पर थी, पर मन कहीं और था। गोकुल और वृन्दावन की सुधियों ने कृष्ण को घेर लिया था। सुधियों के उस आकाश में राधा की यादें बिजली की तरह कौंध गईं। राधा, बाँसुरी सुनना भी चाहती थीं, किन्तु उसे अपने हाथों से छोड़ना भी नहीं चाहती थीं; माँगने पर कहती थीं।

‘‘नहीं, हर समय तुम्हारे अधरों पर चढ़ी रहती है, मुझे बजाने दो, तुम सुनो।’’

वह तकरार, जिसमें मिली हार में भी मन में मयूर नाच जाया करते थे। कृष्ण ने कमर के वस्त्रों में दबी बाँसुरी निकाली, अधरों पर रखी और पलकें गिरा दीं। पता नहीं, फिर बाँसुरी अपने सौभाग्य पर इठलाकर स्वतः बज उठी या उन्होंने बजाई। सुदर्शन-चक्र जो स्थान नहीं पा सका वह बाँसुरी को मिला। वह उनकी तर्जनी उँगली तक ही रह गया था, किन्तु बाँसुरी अधरों पर इठलाती थी।

सहसा एक तेज सी लहर उनके पैरों को भिगोने आई और साथ में एक छोटी से मछली भी उनके पैरों को छूते हुए निकल गई। इस स्पर्श से उनकी दृष्टि अपने पैरों पर चली गई। उन्हें याद आया, वृन्दावन में ग्वालबालों और गोपियों के मध्य बाँसुरी बजाते समय वे अपना एक चरण तिरछा रख लेते थे।

एक बार राधा से उनकी अन्य सखियों विशाखा, चित्रा, सुदेवी आदि की उपस्थिति में उनकी अनन्य ललिता ने कहा था,

‘‘देखो, कृष्ण को अपने हृदय में स्थान बहुत सोच-समझकर ही देना, क्योंकि ये एक बार हृदय में प्रवेश कर गये तो इसी तरह चरण तिरछे कर लेंगे और पिफर निकलेंगे नहीं।’’